दिनांक 22 मई, 2019 को अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर माननीया राज्यपाल महोदया के अभिभाषण के मुख्य बिन्दुः—

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री इन्दुशेखर चतुर्वेदी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ० संजय कुमार, झारखण्ड जैव विविधता पर्षद् के अध्यक्ष श्री लाल रत्नाकर सिंह, पर्षद् की सदस्य सचिव श्रीमती शैलजा सिंह, जैव विविधता प्रबंधन समिति के सदस्यगण, प्रेस तथा मिडिया के प्रतिनिधिगण!

- मुझे अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में आप सभी के बीच सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।
- जैसा कि आप सभी जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जन मानस में जैव विविधता के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से दिनांक 22 मई को अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस घोषित किया गया।
- प्रत्येक वर्ष जैव विविधता दिवस का आयोजन किसी विशेष विषय पर किया जाता है एवं इस वर्ष का मूल विषय है "हमारी जैव विविधता, हमारा भोजन, हमारा स्वास्थ्य (Our Biodiversity, Our Food, Our Health)"।
- इस वर्ष का विषय यह दर्शाता है कि जैव विविधता ही हमारे जीवन का मूल आधार है जिससे हमें भोजन एवं स्वास्थ्य प्राप्त होता है। साथ ही इस वर्ष के विषय का मुख्य उद्देश्य आम जनों में हमारे भोजन, खाद्य प्रणालियों, पोषण एवं स्वास्थ्य की जैव विविधता पर निर्भरता के बारे में जागरूकता फैलाना है। यह दिवस प्रकृति द्वारा पृथ्वी पर मानव अस्तित्व और कल्याण के लिये प्रदान की गई

विविधता के उत्सव का प्रतीक है, जिसका लक्ष्य जलवायु परिवर्तन में कमी, पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली, स्वच्छ जल और सभी के लिये भोजन उपलब्ध कराना है।

- पिछले 100 सालों में कई प्रकार के फसल की स्थानीय किस्में किसानों के खेतों से गायब हो गई हैं। कई पारंपरिक घरेलू पशुओं की आधी नस्लों को भी हमने खो दिया है। स्थानीय विविध खाद्य उत्पादन प्रणालियां खतरे में हैं, जिसमें संबंधित स्वदेशी एवं स्थानीय पारंपरिक ज्ञान शामिल हैं। इस गिरावट के साथ कृषि जैव विविधता समाप्त हो रही है और पारंपरिक चिकित्सा एवं स्थानीय खाद्य पदार्थों का भी आवश्यक ज्ञान समाप्त होता जा रहा है।
- आज के इस आधुनिक दौर में मानव द्वारा अपनी सुख–सुविधाओं की पूर्ति के लिए अवैज्ञानिक एवं मनमाने तौर तरीके से जैव विविधता का दोहन कर इसे क्षति पहुँचाया जा रहा है जिसका परिणाम हम सभी आज महसूस कर रहे हैं जैसे– असमय बारिश, धरती पर तापमान में वृद्धि इत्यादि। अभी हम देख सकते हैं कि जो राँची कभी अविभाजित बिहार राज्य की ग्री मकालीन राजधानी थी, वहाँ इतनी गर्मी? विगत कुछ व ों से यहाँ की गर्मी चर्चा का वि ाय बना हुआ था।
- आज के बदलते परिवेश में अनेक प्राणी, पेड़–पौधे विलुप्त हो चुके हैं एवं कुछ विलुप्ति के कगार पर हैं। समय आ गया है कि इसके संरक्षण हेतु ठोस एवं कारगर कदम उठाये जाये तथा हम सभी इसके संरक्षण के प्रति अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायें। सभी से आह्वान होगा कि जैव विविधता को बचाने के लिए प्रथम शुरूआत आप स्वयं करें ताकि दूसरे लोग आपसे प्रेरित हों।

- यहां उपस्थित लोगों से मैं कहना चाहूंगी कि जैसे हमारे माँ—बाप हमारा पालन—पोषण करते हैं और बड़े होकर हम उनका ध्यान रखते हैं उसी प्रकार जैव विविधता भी हमारी पालनहार हैं, जिसका ध्यान हमें रखना आवश्यक है।
- आज के इस विकासशील दौड़ में हम जैव विविधता के प्रति अपनी भूमिकाओं की समीक्षा करने की आवश्यकता है। जैव विविधता काफी तीव्र गति से समाप्त हो रही है जिस कारण प्रदूषण, जलवायु परिर्वतन इत्यादि देखना पड़ रहा है। जैव विविधता की कड़ी में प्रत्येक प्रजातियों की अपनी अहम भूमिका है। यदि इस कड़ी की अनदेखी करते हुये और अत्यधिक नुकसान पहुंचाया जाता है तो मानव सभ्यता का विनाश होना निश्चित है। इसलिये हमें सभी प्रजातियों के संरक्षण हेतु संकल्प लेने की आवश्यकता है।
- कई बार ऐसा देखने को मिलता है या हम ऐसा करते है कि किसी एक प्रजाति को नुकसान पहुंच रहा हो, तो हम यह सोचते हुये उसकी अनदेखी कर देते हैं कि मेरा इससे कोई लेना—देना नहीं है। इसपर भी हमें गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।
- झारखण्ड राज्य अपनी विविध भौगोलिक (diverse physiographic) और मौसमी परिस्थितियों (climatic condition) की वजह से जैव विविधता के मामले में एक समृद्ध राज्य है। राज्य का लगभग 30: भौगोलिक क्षेत्र जंगलों से आच्छादित है। झारखण्ड वन्यप्राणी बहुल्य राज्य भी है। यहाँ 11 आश्रयणी एवं 1 राष्ट्रीय उद्यान स्थित है जो कि जैव विविधता के संरक्षण हेतु काफी मददगार साबित हो रहा है। झारखण्ड प्राकृतिक संसाधनों का धनी

है। जैव विविधता से हमें औषधियां, जल, शुद्ध वायु तथा अन्य सामग्रियां एवं सेवाएं प्राप्त होती है।

- जैसा कि आप सब जानते हैं झारखण्ड एक जनजाति बहुल्य राज्य है जहां उनके द्वारा पूर्व से ही प्राकृतिक संपदाओं को सहेज कर रखने की परंपरा चली आ रही है। इसी क्रम में हमलोगों द्वारा प्राकृति से जुड़े विभिन्न त्योहारों जैसे—सरहुल, करमा इत्यादि का आयोजन व्यापक रूप से किया जाता है जो लोगों को प्रकृति के संरक्षण हेतु संदेश देती है।
- मुझे यह जानकर काफी हर्ष हो रहा है कि जैव विविधता अधिनियम, 2002 के क्रियान्वयन हेतु हमारे राज्य में गठित झारखण्ड जैव विविधता पर्षद् द्वारा जैव विविधता के संरक्षण में काफी सराहनीय कार्य किया जा रहा है। यह अधिनियम स्थानीय जैविक संपदा पर संबंधित समुदाय का अधिकार स्थापित करता है एवं इसी क्रम में जैव विविधता पर्षद् द्वारा अबतक 3869 पंचायत स्तरीय, 116 प्रखण्ड स्तरीय, 7 जिला स्तरीय एवं 12 नगर निकाय स्तरीय जैव विविधता प्रबंधन समितियों का गठन किया जा चुका है एवं मात्र 690 स्थानीय निकाय स्तरों पर समितियों का गठन शेष है, आशा है कि बहुत ही जल्द गठन कर लिया जायेगा।
- मुझे यह जानकारी प्राप्त हुई है कि पर्षद् द्वारा जैव विविधता प्रबंधन समिति एवं चयनित गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग से जन जैव विविधता पंजी का निर्माण भी कराया जा रहा है जिसमें स्थानीय स्तरों पर उपलब्ध जैव विविधता के बारे में सूचनाएं एकत्रित की जा रही है। साथ ही जैव विविधता से संबंधित पारंपरिक ज्ञान का भी दस्तावेजीकरण उक्त पंजी में किया जा रहा है जो कि

भविष्य में जैव विविधता के संरक्षण, संवर्द्धन, प्रबंधन में अहम भूमिका निभायेगी।

- जैव विविधता प्रबंधन समिति सदस्यों के क्षमता वर्द्धन हेतु पर्षद् द्वारा स्थानीय स्तर पर लगातार प्रशिक्षण एवं क्षमता वर्द्धन कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। पर्षद् द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों में जैव विविधता के संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के उदेश्य से विभिन्न कार्यक्रमों का अयोजन किया जा रहा है जिस क्रम में बच्चों में भी जैव विविधता के प्रति जागरूकता लाने हेतु राज्य के विभिन्न विद्यालयों में बच्चों के बीच जैव विविधता से संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है।
- जैव विविधता का संरक्षण करना सिर्फ सरकार या जैव विविधता प्रबंधन समिति सदस्यों तक ही सीमित नहीं है। इसमें आम जनों की भूमिका भी अहम है, तभी जाकर हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे।
- मैं आशा करती हूँ कि जैव विविधता के संरक्षण एवं संवर्द्धन के प्रति सरकार के सभी विभाग, विद्यालय, महाविद्यालय, अनुसंधान संस्थान आदि परस्पर समन्वय स्थापित कर कार्य करेंगे।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!